ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

नवाब शाहजहाँ बेगम का साहित्य में योगदान

कु. शाइस्ता खान

शोधार्थी – सामाजिक विज्ञान विभाग, बरकतउल्लाह विश्वविघालय, भोपाल, म.प्र

तजामुल अहद सोफी

शोधार्थी – मानविकी और भाषा विभाग, रविन्द्रनाथ टेगौर विश्वविघालय, राससेन म.प्र.

सारांश :- भारत में मुगल साम्राज्य के पतन के पश्चात् अनेक स्थानीय रियासतें भारतीय उपमहाद्वीप में उभर कर आई। जिसमें भोपाल रियासत भी मध्य भारत की छोटी मुस्लिम रियासत थी, जिसकी स्थापना सरदार दोस्त मोहम्मद खान ने सन् 1708 में की थी। यह न केवल अपने सुन्दर भू–भाग के लिए प्रसिद्ध है, तदापि 19वीं शताब्दी की हैदराबाद के पश्चात् दूसरी सबसे महत्वपूर्ण मुस्लिम रियासत के रूप में भी जानी जाती है। यह एक ऐसी स्वदेशी रियासत थी जहॉ राज्य का उत्तराधिकारी सबसे बढ़ी संतान को बनाया जाता था, चाहे वह महिला हो या पुरूष, जिसके फलस्वरूप भोपाल रियासत में निरंतर चार असाघारण महिला शासकों द्वारा एक से अधिक शताब्दी तक शासन करना इस्लामिक इतिहास में अद्वितीय है। इन महिला नवाबों, नवाब कुदसिया बेगम (1819-1837) ,नवाब सिकन्दर बेगम (1844-1868) ,नवाब शाहजहाँ बेगम (1868-1901) ,तथा नवाब सुल्तान जहाँ बेगम (1901-1926) ने अपने शासनकाल में अनेक सामाजिक, आर्थिक, और प्रशासनिक सुघार किये जिससे भोपाल के नवाबों का स्वर्णिम् काल दिखाई देता है। इन बेगमों का भोपाल के सांस्कृतिक, शैक्षिणिक, और साहित्यिक विकास में भी उल्लेखनीय योगदान रहा। प्रस्तुत शोघपत्र में नवाब शाहजहाँ बेगम का साहित्य के क्षेत्र में किए गये योगदान का अघ्यन किया गया है।

मुख्य शब्द :- नवाब शाहजहाँ बेगम , साहित्यिक योगदान, मुद्रालय।

अध्यन का उद्देश्य :- नवाब शाहजहाँ बेगम का साहित्यिक योगदान का अघ्यन करना।

अध्यन विधि :- द्वितीयक समंको पर आघारित।

प्रस्तावना :- नवाब शाहजहाँ बेगम का जन्म 30 जुलाई 1838 को इस्लाम नगर में हुआ था। उनके पिता नवाब जहाँगीर मोहम्मद खान शायर (कवि) और मॉ सिकन्दर बेगम गद्य लेखिका थी, जिससे बेगम को साहित्यिक वातावरण विरासत में मिला। नवाब शाहजहाँ बेगम का शासनकाल साहित्य के क्षेत्र में स्वर्णकाल माना जाता हैं। उनके शासनकाल में शिक्षा और साहित्य की जितनी पुस्तकों का प्रकाशन हुआ उतना कहीं और देखने को नहीं मिलता। बेगम स्वंय भी उच्च कोटी की शायरी एवं लेखिका थी। वह फारसी और उर्दू दोनों भाषाओं में शेअर कहती थी। उनके दो दीवान

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

(काव्य संग्रह) ''दीवान-ए-शीरीन'' और ''ताज-उल-कलाम'' नाम से प्रकाशित हुए। बेगम ने भोपाल के इतिहास पर ऐतिहासिक पुस्तक "ताज-उल-इकबाल" तारीख भोपाल नाम से लिखी, तथा एक लम्बी मसनवी (कविताओं की श्रृंखला) "सिद्दीक-उल-ब्यान" नाम से लिखी। बेगम के शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना यह है कि इस काल में महिलाओं को शायरो-शायरी में बहुत अधिक दिलचस्पी उत्पन्न हुई, इसमें हुस्नआरा बेगम, मुनव्वर जहाँ बेगम, मुर्शरफ जहाँ बेगम आदि के अपने दीवान प्रकाशित हुए है। नवाब शाहजहाँ बेगम ने हिन्दुस्तान के कोने कोने से विद्वानों और साहित्यकारों को भोपाल में आमंत्रित कर संरक्षण दिया।

साहित्य में योगदान :- नवाब शाहजहाँ बेगम का शासनकाल साहित्य के क्षेत्र में स्वर्णकाल माना जाता हैं। उनके शासनकाल में उर्दू में शिक्षा और साहित्य की जितनी पुस्तकों का प्रकाशन हुआ उतना कहीं देखने को नहीं मिलता। बेगम की उदारता के कारण लाखों रूपया पुस्तकों के प्रकाशन में खर्च होने लगा। नवाब सिद्दीक हसन से पुर्नविवाह करने के पश्चात् बेगम ने साहित्य की अत्याधिक सेवा की क्योंकि नवाब साहब स्वंय उच्च कोटी के साहित्यकार थे , उनकी सैकड़ों पुस्तकों को उर्दू , अरबी, और फारसी भाषा में हिन्दुस्तान से लेकर मिस्र, अरब, व रोम में प्रकाशित हुई है।[1] उन्होंने देश विदेश के अनेक शायर और साहित्यकारों को भोपाल में आमंत्रित कर संरक्षण दिया। जिनमें अधिकतर दिल्ली और लखनऊ के थे। यह साहित्यकार अपने साथ ज्ञान की ऐसी बांसुरी लेकर आये जिसकी मधुर तान जिसने भी सुनी वह उसकी और खिंचा चला गया। नवाब शाहजहाँ बेगम का दरबार विद्वान और साहित्यकारों से भरा रहता था, जिसमें से अधिकतर लेखक थे ,बेगम उनसे फरमाइश् करके किताबें लिखवाती थी और इनाम व सम्मान से मालामाल कर देती थी। बेगम के महल में बढ़े घूमधाम से मुशायरे कवि सम्मेलन हुआ करते थे , वह शायरों को इनाम, सम्मान के साथ खिलअत् भी दिया करती थीं। उनके शासनकाल के प्रसिद्ध साहित्यकार, नवाब सिद्दीक हसन, हकीम असगर हुसैन, अमजद अली अशहरी, नवाब यार मोहम्मद खॉ "शौकत" मुंशी हुसैन खॉ, नवाब आलमगीर मोहम्मद खॉ आदि थे।

मौलाना अशहरी के अनुसार "शाहजहाँ बेगम की बदोलत न सिर्फ भोपाल में शयरो-शायरी का चर्चा आम हो गया बल्कि उनके महल खास में अक्सर मुशायरों की महफिलें आयोजित हुआ करती थीं, जिसकी विशेषता यह थी कि इसमें उच्च वर्ग की महिलायें भी सम्मिलित हुआ करती थीं, जिसमें कुछ उच्च कोटी की शायरायें थी।"[2]

नवाब शाहजहाँ बेगम स्वंय एक शिक्षित महिला थी, उनको शायरी और साहित्य में लगाव प्राकृतिक रूप से था। वह उच्च कोटी की शायरा (कवियत्री) और साहित्यकार थी, मोहम्मद अमीन माहरवी लिखते है कि "उनका बढ़ा कारनामा उर्दू साहित्य का संरक्षण है।" वह उर्दू और फारसी दोनों भाषाओं में शेयर कहती थी उर्दू में "शीरीन" और फारसी में "ताजवर" उपनाम रखती थी। उनके दो दीवान (काव्यसंग्रह) "दीवाने शीरीन" और "ताज-उल-कलाम" के नाम से प्रकाशित हुए। उन्होंने एक लम्बी मसनवी "सिद्दीक-उल-ब्यान" नाम से लिखी है।[3] बेगम ने भोपाल के इतिहास पर ऐतिहासिक पुस्तक "ताज-उल-इकबाल" तारीख भोपाल नाम से लिखी। महिलाओं पर एक

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

पुस्तक "तहज़ीब-उल-निस्बां व तरबियतुल इन्सां " लिखी। इसके अतिरिक्त बेगम ने दो शब्दकोष ख़ज़ीनतुल लुगत व लुगत-ए-शाहजहाँनी नाम से प्रकाशित है।

मौहम्मद जमील अहमद बरेलवी के अनुसार " बेगम बहुत साहसी और शिक्षित महिला थी वह फारसी और उर्दू दोनों में शेअर कहती थी , व उर्दू में 'शीरीन' और फारसी में 'शाहजहाँ' उपनाम रखती थी।"[4]

इसी प्रकार रामबाबू सक्सैना अपनी पुस्तक वह "तारीख अदब उर्दू " में लिखते है कि " शाहजहाँ बेगम साहिबा बहुत अच्छी शायरा थी, वह उर्दू में 'शीरीन' बाद में 'ताजवर' तथा फारसी में शाहजहाँ उपनाम रखती थी।"[5]

नवाब शाहजहाँ बेगम के दरबारी शायर अबुल कासिम 'मोहतशाम' ने अपने संरक्षण में बेगम द्वारा रचित चार ग़ज़लों के दीवान और रूबाइयों का उल्लेख किया है जिनके नाम शाम-ए-अंजुमन, नरगिस्तान-ए-सुखन, सुब-ए-गुलशन, व रूज़-ए-रोशन है । इसी के साथ नवाब सिद्दीक हसन ने सन् 1880 में प्रकाशित अपनी जीवनी "अल ताज-उल-मुकल्लल" में बेगम द्वारा हिन्दी में रचित पॉचवे दीवान की प्रशंसा की है।[6] बेगम को भाषा से भी बहुत लगाव था वह कभी कभी भाषा में ठुमरियां लिखा करती थी।[7] नवाब शाहजहाँ बेगम न सिर्फ शायरा थी बल्कि शायरों का संरक्षण भी करती थी। अतएव बेगम के सहयोग से मिरज़ा मेंहदी शिराज़ी ने एक तज़किरा फारसी में "तज़किरातुल ख़्वातीन" लिखा जिसमें पिछले ज़माने की प्रसिद्ध महिलाऔं के स्थिती लिखी है।[8]

नवाब शाहजहाँ बेगम शायरा होने के साथ-साथ एक उच्च कोटी की लेखिका भी थी, उन्होंने गद्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भोपाल के इतिहास पर ऐतिहासिक पुस्तक "ताज-उल-इकबाल" तारीख भोपाल नाम से लिखी, इस पुस्तक में बेगम ने भोपाल रियासत के संस्थापक सरदार दोस्त मोहम्मद खान से लेकर अपने शासनकाल के आरंभिक चार वर्षो का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। इसके अतिरिक्त इसमें विभिन्न अधिकारियों, जनगणना, परगनों की भूमी का मूल्यांकन, ऐतिहासिक किले, बाग, आदि का वर्णन है। बेगम ने "ताज-उल-इकबाल का उर्दू के अतिरिक्त अंग्रेज़ी, फारसी, और मराठी भाषा में अनुवाद कराया है। बेगम की दूसरी पुस्तक तहज़ीब-उल-निस्बां व तरबियतुल इन्सां है इस पुस्तक में बेगम ने महिलाऔं के घरेलू कार्य तथा अर्थव्यवस्था को सिखाने में मद्द की है। इसके अतिरिक्त इसमें महिलाऔं की बीमारी, बच्चों के रोग, बुद्धिमान मातृव्व, महिलाऔं के अधिकार, विवाह, तलाक आदि का वर्णन है। यह भारत में प्रकाशित पहली विश्वकोष है। बेगम ने एक लम्बी मसनवी "सिद्दीक-उल-ब्यान" नाम से लिखी जिसमें खगोल विज्ञान, पृथ्वी का स्वरूप, भारत की भूमी का वर्णन, भारतीय त्योहार, के अतिरिक्त शहंशाह तैमूर और राजा पिथौरा का युद्ध एवं तैमूर की विजय का जश्न फिर बाबर और शाहजहॉ आदि का वर्णन है। इसके अतिरिक्त बेगम ने दो शब्दकोष खज़ीनतुल लुगत व लुगत-ए-शाहजहाँनी नाम से लिखे है। खज़ीनतुल लुगत में 6 अलग अलग भाषाओं उर्दू फारसी, अरबी, संस्कृत, अंग्रेज़ी तथा तुर्की भाषा के 5500 वर्तमान शब्दों के समतुल्य शब्द है।[9] लुगत-ए-शाहजहाँनी में फारसी भाषा के शब्दों का उर्दू भाषा में अनुवाद है।[10]

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

शाहजहाँ बेगम ने घर्म और घर्मशास्त्र की पुस्तकों के प्रकाशन में विशेष रूचि ली । उन्होंने ने एक और घार्मिक पुस्तक लिखी थी परन्तु वह पूर्ण न हो सकी थी।[11] बेगम ने दुलर्भ और मूल्यवान पॉण्डुलिपी के प्रकाशन और मुद्रण में उदारतापूर्वक सहयोग किया, नील–उल–आतार, ज़िला–उल–ऐहेन, फतेह–उल–बारी, शरेह–ए–सबीह बुखारी आदि कुछ ऐसी दुर्लभ और अनमोल पुस्तकें थी जो विश्व के ज्ञान सागर से खोने वाली थी बेगम ने उनका पुनः प्रकाशन कराकर उन्हें विलुप्त होने से बचा लिया, विशेषकर फतेह–उल–बारी जिसकी छपाई और प्रकाशन की तत्काल आवश्यकता थी।[12]

बेगम के शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस काल में महिलाऔं में शयरो –शायरी और साहित्य में रूचि बहुत आम हो गई थी। इस काल में अनेक महिलायें साहिबे दीवान (काव्य संग्रह) की रचियता थी जिसमें एक दीवान और दो गद्य की लेखिका हुस्नआरा बेगम थी इसके अतिरिक्त मुनव्वर जहाँ बेगम, मुर्शरफ जहाँ बेगम आदि उच्च कोटी की महिला साहित्यकार थी। शाहजहाँ बेगम की साहित्य में रूचि इतनी अधिक थी कि उन्होंने अपने दरबारी शायर अबुल कासिम 'मोहतशाम' को प्रभार दिया कि वह फारसी में लिखने वाली महिला कवियत्रियों का एक संकलन इकट्ठा करें। इस संकलन को "अख्तर–ए–ताबान" नाम से प्रकाशित किया गया जिसमें 81 कवियत्रियों के कार्य का प्रचार किया गया था जब यह पुस्तक सत्तारूढ़ बेगम के संरक्षण में सन् 1881में प्रकाशित् हुई थी।[13]

मुद्रालय :- नवाब शाहजहाँ बेगम के शासनकाल में शिक्षा, साहित्य और कला में असंख्य पुस्तकों का प्रकाशन हुआ। बेगम द्वारा प्रकाशन के लिए दो मुद्रालय "मतबा शाहजहाँनी" तथा "मतबा सुल्तानी" नाम से सन् 1880 में स्थापित किये गये थे। मतबा शाहजहाँनी में शैक्षणिक एंव साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन होता था, इस मतबे में भोपाल का पहला अखबार 'अमदतुल अखबार' सन् 1871 में प्रकाशित हुआ था। मतबा सुल्तानी में रियासत के कार्यालयों के स्टाम्प की छपाई की जाती थी।[14] सन् 1900 तक भोपाल रियासत में अखबार और पत्रिकायों की संख्या 9 तक पहुँच गई थी। शाहजहाँ बेगम की उदारता के कारण लाखों रूपया पुस्तकों के प्रकाशन के लिए खर्च होने लगा। शैक्षणिक और साहित्यिक पुस्तकों के प्रकाशन के लिए 8 सरकारी मतबे थे जो दिन रात मुफ्त में किताबें छापते रहते है। मौलाना असलम जयराजपुरी के अनुसार "भोपाल की हैसियत उस समय बगदादे हिन्द की थी।"

मौलाना अब्बास रफअत के अनुसार "भोपाल के सरकारी मतबे मुद्रालय से लगभग दो सौ पुस्तकें वार्षिक प्रकाशित होती और मुफ्त में वितरित की जाती थी।"[15]

इस काल में शिक्षा, कला और साहित्य पर असंख्य पुस्तकें प्रकाशित हुई। बेगम की और हर पुस्तक पर नगद इनाम दिया जाता था, अतएव इस काल में अनेक शायरों के तज़किरे और दीवान (काव्य संग्रह) प्रकाशित हुए। शायरों और साहित्यकारों को नौकरी, इनाम, और सम्मान दिया जाता था। शयरो–शायरी के संघर्भ में यह काल दिल्ली और लखनऊ के समतुल्य बन गया था।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

निष्कर्ष :- नवाब शाहजहाँ बेगम का शासनकाल साहित्य के क्षेत्र में स्वर्णकाल माना जाता है। उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में जितने कार्य किये उतने कही देखने को नहीं मिलते, असंख्य पुस्तकों के प्रकाशन के साथ–साथ शायरों और साहित्यकारों का संरक्षण आदि बेगम का साहित्यिक लगाव, विराट हृदयता, पवित्र मानसकिता, और उदारीकरण को प्रस्तुत करता है। बेगम ने इन साहित्यकारों के

सहयोग से भोपाल को भी दिल्ली और लखनऊ की तरह साहित्यिक केन्द्र बनाने का प्रयास किया ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. जयराजपुरी हाफिज़ मोहम्मद असलम – ख्वातीन ,प्रकाः फैज़–ए–आम, अलीगढ़ 1914,पृ.सं, 225,226

2. रिज़वी सलीम हामिद –उर्दू अदब की तरक्की में भोपाल का हिस्सा, प्रकाः अलवी प्रेस भोपाल, 1965 ,पृ.सं. 151

3. माहरवी मोहम्मद अमीन ज़वेरी – बैगमात भोपाल ,प्रकाः हमीदिया आर्ट प्रेस भोपाल,1918 पृ.सं, 95

4. बरेलवी मोहम्मद जीमल अहमद – तज़किरा शायरात–ए–उर्दू ,प्रकाः अलकटक प्रेस बरेली,1944, पृ.सं 197

5. सक्सैना रामबाबू – तारीख अदब उर्दू ,प्रकाः नवल किशोर प्रेस 1966 ,पृ.सं, 410

6. लेर्म्बट हरले सियोभान – मुस्लिम वुमन रिफॉर्म एण्ड प्रिंसली पेट्रोनेज, प्रकाः रूटलेड्ज लंदन, 2007 पृ.सं. 35

7. अशहरी सैय्यद अमजद अली – एशियाई शायरी ,प्रकाः मतबा आगरा , पृ.सं, 132

8. सुल्ताना राफिया उर्दू अदब की तरक्की में ख़्वातीन का हिस्सा, प्रका: मजलिस–ए–तहकीकात–ए–उर्दू हिमायत नगर हैदराबाद, पृ.सं. 50

9. बेगम नवाब सुल्तान जहाँ बेगम – हयात–ए–शाहजहाँनी ,प्रकाः मुफीद आम आगरा ,1914 ,पृ.सं 150-152

10. बेगम नवाब शाहजहाँ –लुगत–ए–शाहजहाँनी प्रकाः फैज़ मतला शाहजहाँनी भोपाल 1878

11. माहरवी मोहम्मद अमीन ज़वेरी –बैगमात भोपाल ,प्रकाः हमीदिया आर्ट प्रेस भोपाल,1918 पृ.सं 95

12. बेगम नवाब सुल्तान जहाँ– हयात–ए–शाहजहाँनी, प्रकाः टाइम्स प्रेस बम्बई 1926,पृ.सं 224,225

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 13 July 2020

13. लेर्म्बट हरले सियोभान – मुस्लिम वुमन रिफॉर्म एण्ड प्रिंसली पेट्रोनेज, प्रकाः रूटलेड्ज लंदन, 2007 पृ.सं. 35

14.. अब्बास रफअत मौलाना – खुलासतुल हाल मिन तारीख भोपाल. प्रकाः मुफीद आम आगरा 1885, पृ.सं 30

15. रिज़वी सलीम हामिद – उर्दू अदब अदब की तरक्की में भोपाल का हिस्सा, प्रकाः अलवी प्रेस भोपाल 1965 ,पृ.सं. 151

Copyright @ 2020 Authors